



# International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 5, September – October 2025

**ISSN**

INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA

**Impact Factor: 8.028**

# माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में यौन शिक्षा संबंधी जागरूकता का मूल्यांकनात्मक अध्ययन

जय शिवराज जोशी, शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

डॉ. खेलशंकर व्यास, शोध पर्यवेक्षक, शिक्षा शास्त्र विभाग, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

**सारांश:** वर्तमान समाज में यौन शिक्षा का उचित स्तर पर न होना किशोरों और युवाओं में भ्रांतियों, अर्ध-जानकारी और सामाजिक व मानसिक समस्याओं का कारण बन रहा है। यह शोध माध्यमिक स्तर के छात्रों में यौन शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करता है। अध्ययन का उद्देश्य छात्रों में यौन शिक्षा के प्रति जागरूकता का स्तर मूल्यांकन करना, उनके ज्ञान में कमी और भ्रांतियों का पता लगाना तथा सुधार के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है।

अध्ययन में सर्वेक्षणात्मक पद्धति अपनाई गई और माध्यमिक विद्यालय के 100 छात्रों (50 लड़के और 50 लड़कियाँ) को लक्षित किया गया। डेटा संग्रह के लिए स्वनिर्मित यौन शिक्षा जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण (Percentage Analysis, Mean, Standard Deviation) किया गया।

अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि अधिकांश छात्रों को यौन शिक्षा अधूरी या सतही रूप में प्राप्त होती है। किशोरों में जागरूकता आयु और लिंग के आधार पर भिन्न पाई गई, तथा अभिभावक और शिक्षक संवाद की कमी ने जागरूकता को प्रभावित किया। शोध से यह भी सामने आया कि उचित, वैज्ञानिक और आयु-उपयुक्त यौन शिक्षा छात्रों को सुरक्षित, जिम्मेदार और आत्मनिर्भर यौन व्यवहार अपनाने में सक्षम बनाती है।

इस अध्ययन का महत्व यह है कि यह न केवल विद्यार्थियों की यौन जागरूकता का आंकलन करता है, बल्कि शैक्षणिक और सामाजिक सुधार हेतु मार्गदर्शन और सुझाव भी प्रस्तुत करता है। परिणामों के आधार पर अभिभावक, शिक्षक और विद्यालय प्रशासन को सक्रिय भागीदार बनने और छात्रों के लिए सुरक्षित एवं वैज्ञानिक यौन शिक्षा कार्यक्रम लागू करने की आवश्यकता है।

**मुख्य शब्द:** यौन शिक्षा, जागरूकता, किशोरावस्था, माध्यमिक विद्यालय, सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य

## I. प्रस्तावना

यौन शिक्षा का ज्ञान उतना ही आवश्यक है, जितना अन्य विषयों का ज्ञान। वर्तमान समाज में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की प्रगति के बावजूद, हमारे देश में विद्यालय अथवा महाविद्यालय स्तर पर यौन शिक्षा को अपेक्षित स्थान नहीं मिल सका है। इसके परिणामस्वरूप किशोरों एवं युवाओं में यौन शिक्षा से जुड़ी भ्रांतियाँ, अंधविश्वास और अनेक प्रकार की समस्याएँ पाई जाती हैं।

परम्परागत रूप से भारतीय संस्कृति में किशोरों को यौन संबंधी विषयों पर जानकारी देना अनुचित एवं वर्जित माना जाता रहा है। परिवार एवं समाज में इस विषय पर खुलकर चर्चा न होने के कारण अधिकांश किशोर आधी-अधूरी तथा गलत सूचनाओं पर निर्भर रहते हैं। सामान्यतः यह धारणा रही कि विवाह से पूर्व यौन क्रियाओं के बारे में जानना आवश्यक नहीं है। किंतु बदलते समय, आधुनिक जीवनशैली, वैश्विकरण एवं सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रभाव ने यौन संबंधी धारणाओं में परिवर्तन किया है।

आज यह स्पष्ट हो चुका है कि किशोरों को यौन शिक्षा प्रदान करना उनके शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास हेतु अनिवार्य है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों (जैसे यूनेस्को, डब्ल्यू.एच.ओ.) के अनुसार, 12 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग के बच्चों को यौन शिक्षा प्रदान करना आवश्यक माना गया है। एक आँकड़े के अनुसार, एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्तियों में से लगभग 34 प्रतिशत 1 से 19 वर्ष की आयु वर्ग में पाए जाते हैं।

अतः यह आवश्यक है कि माध्यमिक स्तर से ही विद्यार्थियों को यौन शिक्षा की वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित जानकारी प्रदान की जाए, जिससे वे न केवल अपने शारीरिक परिवर्तनों को समझ सकें, बल्कि सामाजिक व नैतिक मूल्यों के अनुरूप सुरक्षित एवं स्वस्थ जीवन जी सकें।

## II. समस्या का विवरण

वर्तमान समय में किशोर और यौवा विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर रहे हैं, जिनमें से अधिकांश अधूरी, गलत या विकृत होती है। इसके कारण वे असुरक्षित यौन व्यवहार, यौन शोषण, अनुचित संबंधों तथा सामाजिक और मानसिक समस्याओं के शिकार बन सकते हैं। भारत में यौन शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी और विद्यालयों में इसके सीमित या अपर्याप्त शिक्षण ने यह समस्या और भी बढ़ा दी है।

इस शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के छात्रों में यौन शिक्षा के प्रति जागरूकता का स्तर, उसकी अभावपूर्ण जानकारी और सुधार हेतु सुझावों का विश्लेषण करना है।

## III. साहित्य समीक्षा

- यूनेस्को (2018):** अंतरराष्ट्रीय तकनीकी मार्गदर्शन के अनुसार, यौन शिक्षा किशोरों को उनके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास हेतु आवश्यक है।
- WHO (2020):** किशोर यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य रिपोर्ट में बताया गया कि पर्याप्त यौन शिक्षा न मिलने पर किशोर असुरक्षित यौन व्यवहार और यौन संचारित रोगों के प्रति संवेदनशील होते हैं।
- कुमार, नवीन (2019):** उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों पर अध्ययन में पाया गया कि शिक्षक यौन शिक्षा प्रदान करने में संकोच करते हैं, जिससे छात्रों में जागरूकता कम होती है।
- मिश्रा, अरविंद (2018):** भारतीय परिप्रेक्ष्य में किशोरावस्था और यौन शिक्षा पर अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने आया कि विद्यालय स्तर पर वैज्ञानिक यौन शिक्षा न होने पर भ्रांतियाँ अधिक होती हैं।
- सिंह, सुनील (2019):** अध्ययन से पता चला कि विद्यार्थियों में यौन शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों की सक्रिय भूमिका अनिवार्य है।

**समीक्षात्मक निष्कर्ष:** उपरोक्त अध्ययन दर्शाते हैं कि भारत में यौन शिक्षा का विद्यालयी स्तर पर उचित कार्यान्वयन अभी भी असंतोषजनक है। अतः औपचारिक और संरचित यौन शिक्षा कार्यक्रम की आवश्यकता है।

### शोध प्रश्न

- ✓ माध्यमिक स्तर के छात्रों में यौन शिक्षा के प्रति जागरूकता का स्तर क्या है?
- ✓ कौन-से कारक छात्रों की यौन शिक्षा जागरूकता को प्रभावित करते हैं (जैसे लिंग, आयु, माता-पिता की भूमिका)?
- ✓ छात्रों को यौन शिक्षा के प्रति जागरूक बनाने के लिए कौन-सी शिक्षण विधियाँ और कार्यक्रम प्रभावी हो सकते हैं?

### शोध उद्देश्य

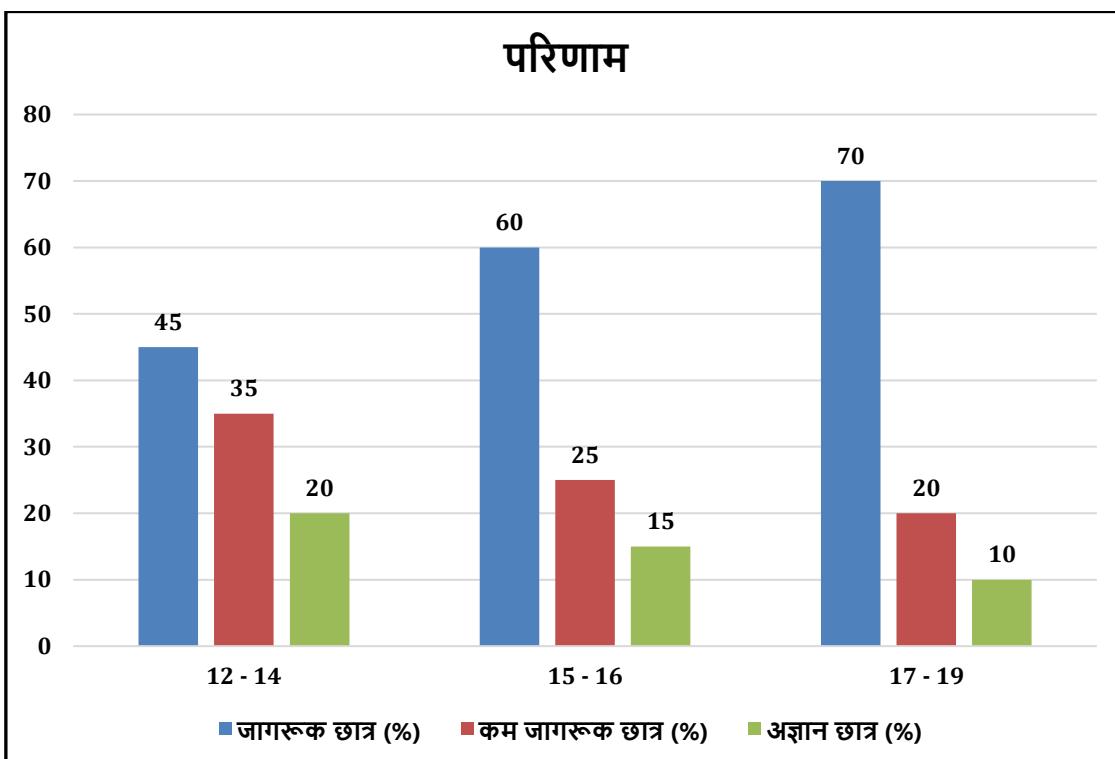
- ✓ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में यौन शिक्षा के प्रति जागरूकता का मूल्यांकन करना।
- ✓ छात्र समुदाय में यौन शिक्षा की आवश्यकता और उसकी वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
- ✓ यौन शिक्षा के प्रभाव और अभाव के सामाजिक व मानसिक परिणामों का अध्ययन करना।
- ✓ छात्रों की जागरूकता बढ़ाने हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रदान करना।

### शोध पद्धति

- ✓ **अध्ययन प्रकार:** सर्वेक्षणात्मक अध्ययन (Descriptive Survey)
- ✓ **लक्षित समूह:** माध्यमिक स्तर के 100 छात्र (50 लड़के एवं 50 लड़कियाँ)
- ✓ **स्थान:** हुंगरपुर
- ✓ **उपकरण:** स्वनिर्मित यौन शिक्षा जागरूकता मापनी
- ✓ **डेटा संग्रह:** व्यक्तिगत प्रश्नावली एवं संरचित साक्षात्कार
- ✓ **विश्लेषण पद्धति:** आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण (Percentage Analysis, Mean, Standard Deviation)

### परिणाम

आयु वर्ग	जागरूक छात्र (%)	कम जागरूक छात्र (%)	अज्ञान छात्र (%)
12 - 14	45	35	20
15 - 16	60	25	15
17 - 19	70	20	10



#### मुख्य निष्कर्ष:

- ✓ 17-19 वर्ष के छात्रों में जागरूकता उच्च रही।
- ✓ लड़कियों में जागरूकता लड़कों की तुलना में थोड़ी अधिक पाई गई।
- ✓ अधिकांश छात्रों को विद्यालय में यौन शिक्षा अधूरी या सतही मिली।
- ✓ अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा संवाद की कमी ने जागरूकता को प्रभावित किया।

#### IV. चर्चा

उपरोक्त परिणाम दर्शाते हैं कि माध्यमिक स्तर पर यौन शिक्षा का औपचारिक कार्यान्वयन अपर्याप्त है। किशोरों की जिज्ञासा और आवश्यकता को पूरा करने हेतु विद्यालयों में व्यवस्थित पाठ्यक्रम, कार्यशालाएँ और परामर्श सत्र आवश्यक हैं।

साहित्य समीक्षा और परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अधूरी जानकारी किशोरों में भ्रांतियाँ, सामाजिक दबाव और मानसिक तनाव बढ़ाती है। इसी कारण आवश्यक है कि अभिभावक और शिक्षक सक्रिय भागीदार बनें और छात्रों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यौन शिक्षा प्रदान करें।

#### सुझाव

- ✓ विद्यालयों में आधिकारिक यौन शिक्षा पाठ्यक्रम लागू किया जाए।
- ✓ अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।
- ✓ विद्यार्थियों के लिए सक्रिय संवादात्मक सत्र एवं सहभागितापूर्ण शिक्षण विधियाँ अपनाई जाएँ।
- ✓ पाठ्यवस्तु आयु-उपयुक्त, सरल और व्यवहारिक होनी चाहिए।
- ✓ विद्यार्थी समुदाय में जागरूकता अभियान और काउंसलिंग सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।

#### V. वर्तमान में प्रासंगिकता

किशोरावस्था जीवन का संवेदनशील चरण है। सूचना प्रौद्योगिकी और मीडिया के प्रभाव ने अधूरी और विकृत जानकारी की समस्या को बढ़ा दिया है। इसलिए सही उम्र में वैज्ञानिक, तार्किक और सांस्कृतिक दृष्टि से उपयुक्त यौन शिक्षा अत्यावश्यक है। यह विद्यार्थियों को न केवल सुरक्षित व्यवहार अपनाने के लिए सक्षम बनाती है, बल्कि सामाजिक और मानसिक संतुलन बनाए रखने में भी मदद करती है।

## सन्दर्भ सूची

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचय्ये रूपरेखा 2005*. नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशन।
2. शर्मा, रामकुमार (2017). *किशोरावस्था एवं स्वास्थ्य शिक्षा*. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
3. यूनेस्को (2018). *अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी मार्गदर्शनः यौन शिक्षा*. पेरिस: यूनेस्को।
4. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) (2020). *किशोर यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य रिपोर्ट*. जेनेवा: WHO।
5. सिंह, सुनील (2019). *भारतीय परिप्रेक्ष्य में किशोर स्वास्थ्य एवं यौन शिक्षा*. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
6. कुमार, नवीन (2019). *उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोणः अंतर्राष्ट्रीय शोध एवं विश्लेषण समीक्षा पत्रिका (IJRAR)*, खंड 6, अंक 1, पृष्ठ 286-290।
7. भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (2007). *किशोर शिक्षा कार्यक्रम (AEP)* दस्तावेज़. नई दिल्ली: भारत सरकार।
8. मिश्रा, अरविंद (2018). *किशोरावस्था और यौन शिक्षा: भारतीय परिप्रेक्ष्य*. वाराणसी: गंगापुत्र प्रकाशन।
9. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2016). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2016* का मसौदा. नई दिल्ली: भारत सरकार।



**ISSN**

INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA



# International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | [ijarasem@gmail.com](mailto:ijarasem@gmail.com) |